REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

डोगरी लोकगीतों में शृंगार

Meenakshi Sharma

लोकगीत आम जन के हृदय की वाणी है तथा यह मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी सुनने को मिलते हैं। लोक–गीत के रचनाकार अज्ञात होते हैं तथा लोक–गीतों का निर्माण धन–प्राप्ति, मान–प्रतिष्ठा आदि कारणों के लिये नहीं किया जाता। इसकी भाषा सरल व सहज होती है। इनमें मनुष्य के हर प्रकार की व्यथा का चित्रण किया जाता है जैसे– सुख – दुख, ब्याह संस्कार, रीति–रीवाज आदि। लोकगीत में शास्त्रीय गीतों की तरह अनुशासन का पालन नहीं किया जाता। इसमें सुर ताल लोगों द्वारा ही दिया जाता है। अतः लोक – गीतों में लोगों के भावों की अभिव्यक्ति प्रकट की जाती है।

जिस प्रकार प्रेम के बिना जीवन नीरस है, उसी प्रकार शृंगार के बिना लोग–गीत बेजान तथा बेरंग है। लोग गीतों में शृंगार का विशेष महत्त्व है जो हृदय के भावों एवं तरंगो को एक–दूसरे से जोड़ते हैं। विभाव, अनुभाव, स्थायी भाव, संचारी भाव शृंगार रस के अंतर्गत आते हैं। लोक गीतों में शृंगार के दो पक्षों का वर्णन किया गया है–

(क) संयोग पक्ष (संभोग)
(ख) वियोग (विप्रलंभ)

क) संयोग पक्ष–

संयोग शृंगार में पति–पत्नी, नायक–नायिका का एक दूसरे के पास होना आव''यक होता है। नायिका के सोलह शृंगार तथा नायक के 'दश रूपक' और नाट्य–शास्त्र में वर्णित दस लक्षण आते हैं। नायिका को मनाने के लिए नायक उसे कई प्रकार के प्रलोभन देता है। जैसे–डोगरी लोक–गीतों में चम्बे का राजा पहाड़ों पर रहने वाली नायिका को चम्बे की सैर कराने का लालच देता है। पर वह नखरा करते हुए नायक को कहती है कि उसे जंगल में रहना ही ठीक लगता है। लोक गीत भी इसी प्रकार है–

''तुगी चम्बे दी सैर करान्ना
ओ मेरिये प्हाड़े दिये गद्दने
असें जंगले दा रौहना गै चंगा
ओ मेरेआ चम्बे देआ
राजेआ।''[1]

नायिका के रूप तथा सौन्दर्य चित्रण का वर्णन उसकी वेशभूषा तथा विभिन्न अवस्थाओं के अनुसार ही दर्शायी गयी है। डोगरी लोक–गीतों में नायिका सुन्दर गहने पहनती है जैसे – चूड़िया, नाक में छोटी सी नत्थ, तीली, कानों में झूमके, कुण्डल, बाले, कैण्ठा, गुलबन्द, हार आदि।

''चूड़ियाँ वाला बाजां लांदा,
आ चढ़ा लै चूड़िया।''[2]

नायक से मिलने की अनोखी ही खुशी नायिका के मन में प्रस्फुटित होती है। सुन्दर दिखने के लिए तथा नायक को आकर्षित करने के लिए नायिका अपने केश सवारती है

1 डोगरी लोकगीत, भाग–17, पृ. 136
2 डोगरी लोकगीत, भाग–7, पृ. 182

तथा नायक भी अपने बालों में खुशबू वाले तेल आदि का प्रयोग करता है। जैसे–

''जुल्फां ते तेरियां गज–गज लम्मियां,
तेले दी सीसी पाई लै तूं
राजे देया नौकरा।''[3]

काजल – सिंदूर, गहने, सुन्दर – वस्त्र आदि यह सब शृंगार के अंतर्गत आते हैं तथा डोगरी लोक–गीतों में इनका वर्णन भी किया जाता है। डोगरी लोक–गीतों में नायक एक ही बार काजल लगाता है, वह भी विवाह के समय अपनी भाभी द्वारा। जैसे–

''के किश देग्गा देरा सुरमा – पुआई,
पन्ज रपेइये भावो, सुरमा – पुआई।''[4]

नायक – नायिका एक दूसरे से मिलने के कई बहाने ढूंढते हैं तथा जब मिलने की बेला आती है तो नायिका घर के काम काज में फस कर रह जाती है। नायक उसे सब कुछ छोड़कर अपने पास आने को कहता है। जैसे–

''तेरे मिलने दा बेल्ला बो
मिलना तां मिल गंगिये
छुड़ सारा झमेल्ला बो
चलना तां चल गंगिये
कम्म घरै दा करनी में
बैह्ल निं लगदी
पर बस्स होई में बो
दिलै इच आग लगदी।''[5]

कहते हैं डोगरी लोक–गीतों में जात – पात, ऊंच – नीच किसी प्रकार का भेद–भाव नहीं देखा जाता। मन के विचार तथा ह्रदय के भाव एक दूसरे से मिलने चाहिए। जैसे–

''अखें – मन मिले दे सौद्दे सारे
मन मिलें दियां बातां जी
हिरख निं दिखदा ऊंच–नीच
ते हिरख निं पुच्छै जात गी।''[6]

ख) वियोग (विप्रलंभ) शृंगार

जहाँ एक और मिलने की खुशी, साज–शृंगार ह्रदय में उमंग आदि डोगरी लोक–गीतों में संयोग रस में देखने को मिलती है। वहीं दूसरी तरफ नायक–नायिका के कई कारणों से एक दूसरे से न मिल पाने के वियोग का चित्रण डोगरी लोक–गीतों में देखने को मिलता है। व्याकुलता का चित्रण, गमन की स्थिति, प्रतीक्षा, शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा आदि का वर्णन डोगरी लोक–गीतों में वियोग शृंगार के अंतर्गत देखने को मिलता है। वियोग के कई कारण हो सकते हैं जो इस प्रकार है–

3 डोगरी लोक–गीत, भाग–13, पृ. 47
4 डोगरी लोक–गीत, भाग–14, पृ. 95
5 डोगरी लोकगीत, भाग–13, पृ. 48
6 डोगरी लोकगीत, भाग–13, पृ. 53

क) पूर्वानुराग

मिलने से पूर्व नायक–नायिका के मन में एक दूसरे के लिए आकर्षण तथा प्रेम उत्पन्न होना परन्तु किसी कारण मिलन न हो पाना पूर्वानुराग कहलाता है।

विरह में व्याकुल नायिका नायक से विनती करती है कि वह उसे देखना चाहती है तथा उसे दिन–रात याद करती है तथा उस तक सन्देश पहुँचाती है कि एक बार आकर उसे मिल जाये तथा अपना चेहरा दिखा जाये। जैसे–

''राहें – राहें जंदेआ राजे देआ नौकरा
लेई जाऐआं सनेहा जरूर
सज्जने दा मंदा लगदा।''[7]

ख) मान– किसी कारणवश एक दूसरे से रूष्ट हो जाने के पश्चात नायक–नायिका के मन में जो वियोग उत्पन्न होता है, वह मान–जनित कहा जाता है।

डोगरी लोक–गीतों में जब नायक–नायिका एक दूसरे से ज्यादा देर तक रूठ जाते हैं, तब एक दूसरे को देखने के लिए दोनों विवश हो उठते हैं कि सिर्फ एक बार रूठी हुई नायिका या नायक उसके पास आ जाये और उसे मना ले। एक दूसरे के वियोग में व्याकुल होकर हृदय की विरह एवं दुख का वर्णन इस प्रकार किया गया है–

''चन्न माढ़ा चढ़ेआ
लग्गा पार केरिया
मंदे जन लग्गे दे
ओह् मिली जाऐआ चोरिआ
चिट्ट चन्ना चादरी
ओह् पारै चूकै लम्मियां
चेता जान्ने औंदा ऐ
ते छम–छम रौंदिया न।''[8]

प्रिय के वियोग में नायिका का मन किसी भी तरह के साज – शृंगार के लिए नहीं मानता। अपने मन की व्यथा को वह इस प्रकार व्यक्त करती है–

''कपड़े धोन्नी में
छम्म – छम्म रोन्नी आ
दिक्खी बगान्नियां जी
बे दिक्खी बगान्नियां जोड़ियां गी।
जि'नां दे नारां दे कन्द गे नौकरी
ओह् तोला भर
नाज नेई खंदियां जी
नेई हत्थें मैंहदी
नेई सिरै पर कंघी
ओह् बांदियां जी।''[9]

---

7 डोगरी लोकगीत, भाग–17, पृ. 177

8 डोगरी लोकगीत, भाग–11, पृ. 145

9 डोगरी लोकगीत, भाग–9, पृ. 40

ग) प्रवास–

किसी कारण एक दूसरे से कुछ देर दूर रहना, तथा नायिका/पत्नी का अपने माता–पिता के घर चले जाना या नायक का नौकरी आदि के कारण दूर चले जाना प्रवास कहलाता है। डोगरी लोक–गीतों में नायक फौज की नौकरी अधिकतर पसंद करते हैं। नायक–नायिका को एक दूसरे के बीना कई–कई महिने, साल रहना पड़ता है। ऐसा वियोग का चित्रण डोगरी लोक–गीतों में बखूबी देखने को मिलता है। जैसे–

''राजे देआ नौकरा ओ राजे देआ नौकरा
मंदा लगदा घर आ।''[10]

नौकरी पर गये पति की याद में पत्नी का मन किसी काम में नहीं लगता। हर कार्य के दौरान वह अपने पति को याद करती है तथा बार–बार दोहराती है कि नौकरी छोड़कर उसके पास आ जा।

''आई जा नौकरा कटाई करी नामां
कल्ली दा मेरा दिल धड़कै
सं'ञा होइयां आट्ठा गुन्नां
नौकर आवै ता फुलका पकामा।''[11]

डोगरी लोकगीत में शृंगार के दो पक्ष देखने को मिलते हैं। संयोग पक्ष तथा वियोग पक्ष। संयोग पक्ष में प्रेमी प्रमिका दोनों को एक दूसरे से मिलने की खुशी होती है तथा दोनों एक दूसरे को आकर्षित करने के लिए साज–शृंगार करते हैं। उत्साह, उमंग, सौन्दर्य वर्णन, स्वच्छन्द प्रेम, मिलन की तीव्र इच्छा आदि संयोग पक्ष के अंतर्गत आते हैं। वियोग पक्ष संयोग पक्ष के विपरीत है। व्याकुल मन, रूठने की पीड़ा, उदास हृदय, प्रतीक्षा, शारीरिक और मानसिक पीड़ा, साज–शृंगार से रहित आदि वियोग पक्ष के अन्तर्गत आते हैं। वियोग के कई कारण माने गये हैं जैसे – पूर्वानुराग, मान, प्रवास आदि। अतः डोगरी लोक–गीतों में शृंगार के दोनों पक्ष विद्यमान हैं जो नायक–नायिका की विभिन्न अवस्थाओं को सुन्दर ढंग से दर्शाने में सफल है तथा सरल व सहज रूप में आम लोगों की जीवन अवस्था का चित्रण किया गया है।

सहायक संदर्भ सूचि

1	काव्य के तत्त्व	–	देवेन्द्रनाथ शर्मा पृ॰ 35
2	डोगरी लोक – गीतें दे बक्खरे–बक्खरे रंग	–	डॉ॰ मनोज हीर डॉ॰ सुनील दत्त शर्मा
3	प्रतियोगिता साहित्य	–	डॉ॰ अशोक तीवारी
4	भारतीय काव्यशास्त्र	–	डॉ॰ सत्यदेव चौधरी
5	भारतीय काव्यशास्त्र	–	डॉ॰ कृष्णदेव शर्मा डॉ॰ माया अग्रवाल

[10] डोगरी लोकगीत, भाग–6, पृ. 147
[11] डोगरी लोकगीत, भाग–6, पृ. 147